दैनिक जागरण
पुस्तकें विश्व की खिड़कियां हैं

आर्थिक सुस्ती का दौर

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के बाद विश्व बैंक ने भी चालू वित्त वर्ष के लिए भारत की विकास दर का अनुमान जिस तरह घटाया उस पर हैरत नहीं। बीते कुछ समय से एक के बाद एक संस्थाएं यही बता रही हैं कि भारतीय अर्थव्यवस्था सुस्ती में जकड़ रही है। चंद दिनों पहले भारतीय रिजर्व बैंक ने भी विकास दर का अनुमान 6.8 प्रतिशत से घटाकर 6.1 प्रतिशत कर दिया है। इन स्थितियों में अर्थव्यवस्था की सुस्ती को नकारने का कोई मतलब नहीं। ध्यान रहे कि किसी भी समस्या का सही तरह सामना तभी किया जा सकता है जब उसकी मौजूदगी को स्वीकार किया जाए। आखिर आर्थिक सुस्ती को नकारने वाले इसकी अनदेखी कैसे कर सकते हैं कि एक के बाद एक आंकड़े यही गवाही दे रहे हैं कि आर्थिक विकास की गति धीमी पड़ गई है, बात चाहे जीएसटी संग्रह में लगातार कमी की हो या फिर विभिन्न क्षेत्रों में आ रही गिरावट की। इससे इन्कार नहीं कि पिछले एक माह में वित्त मंत्रालय और साथ ही रिजर्व बैंक की ओर से मंदी के माहौल को दूर करने के लिए कई कदम उठाए गए हैं, लेकिन उनके सकारात्मक नतीजे आने में समय लग सकता है। यह स्वाभाविक है, क्योंकि इतने बड़े देश की अर्थव्यवस्था का पहिया तेजी से घूमने में समय तो लगेगा ही। वक्त की मांग यही है कि सरकार यह सुनिश्चित करे कि उसकी ओर से अर्थव्यवस्था को गति देने के जो उपाय किए जा रहे हैं वे प्रभावी साबित हों। उसे यह भी आकलन करना चाहिए कि और उपायों की आवश्यकता तो नहीं है? उसे कारोबार जगत की चिंता करने के साथ ही यह भी देखना चाहिए कि कृषि क्षेत्र की हालत कैसे सुधरे?

यह ठीक नहीं कि कृषि क्षेत्र में सुधार के तमाम उपायों के बावजूद स्थितियां बदलती हुई नहीं दिख रही हैं। कृषि क्षेत्र में सुधार लाए बिना अर्थव्यवस्था को मजबूती देना कठिन है। विश्व बैंक के अनुसार आर्थिक सुस्ती का मूल कारण घरेलू मांग में कमी है। कृषि की हालत सुधार कर मांग की इस कमी को दूर किया जा सकता है। चूंकि रोजगार के नए अवसर भी मांग की कमी दूर करने में सहायक बनेंगे इसलिए सरकार को बेरोजगारी दूर करने के उपायों पर भी विशेष ध्यान देना होगा। सरकार को इसके प्रति भी सक्रिय होना चाहिए कि आर्थिक सुस्ती की अवधि कम से कम हो। हालांकि विश्व बैंक का यह आकलन राहतकारी है कि अगले वित्त वर्ष में भारत की अर्थव्यवस्था तेजी पकड़ेगी और वह 6.9 और फिर उसके अगले वर्ष 7.2 फीसद तक पहुंच जाएगी, लेकिन सरकार को वे सभी उपाय तो करने ही होंगे जो मौजूदा माहौल को बेहतर बनाने का काम करें।

समान वेतनमान का प्रश्न

झारखंड सरकार ने प्रस्तावित राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर केंद्र को दिए गए अपने सुझाव और मंतव्य में शिक्षकों के एकसमान वेतनमान के प्रावधान पर सवाल उठाया है। राज्य सरकार ने इसे अव्यावहारिक बताते हुए नीति में इसका प्रावधान नहीं करने का सुझाव दिया है। यह राज्य सरकार की अच्छी पहल है। किसी बिंदु को लेकर भविष्य में आनेवाली समस्याओं से बचने के लिए पहले ही उसका समाधान होना ही सही है। दरअसल प्रस्तावित नीति में कक्षा एक से बारह तक के सभी स्तर के शिक्षकों को एक समान वेतनमान देने का प्रावधान किया गया है। झारखंड के परिप्रेक्ष्य में इसे लागू करना काफी मुश्किल है, क्योंकि कई दृष्टिकोण से यह व्यावहारिक नहीं है। राज्य सरकार ने अपने सुझाव में अलग-अलग स्तर के शिक्षकों के लिए अलग-अलग शैक्षणिक अर्हता का हवाला देते हुए कहा है कि झारखंड में एक समान वेतनमान लागू नहीं किया जा सकता। इससे उच्च योग्यताधारी शिक्षकों में अनावश्यक रूप से असंतोष उत्पन्न होगा। झारखंड में विभिन्न श्रेणी के शिक्षकों के लिए अलग-अलग वेतनमान निर्धारित है। प्राइमरी स्कूलों के शिक्षकों के लिए अलग है तो अपर प्राइमरी स्कूलों के शिक्षकों के लिए अलग। इसी तरह माध्यमिक शिक्षा में भी हाई स्कूल शिक्षकों तथा प्लस टू शिक्षकों के लिए अलग-अलग अर्हता और वेतनमान निर्धारित है। पारा शिक्षक भी वेतनमान की मांग कर रहे हैं। जहां तक झारखंड की बात है तो शिक्षक वेतनमान में विभिन्न विसंगतियों को लेकर लगातार अपनी आवाज उठाते रहे हैं। यह आवाज उग्र आंदोलन के रूप में भी बदलती रही है। कई बार स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग को शिक्षकों के साथ समझौता करना पड़ा है। प्राथमिक शिक्षकों का ही एक मामला उच्च अदालतों तक भी पहुंचा। न्यायालय ने शिक्षकों की मांगों को जायज ठहराते हुए उन पर कार्रवाई का निर्देश राज्य सरकार को दिया। बाद में उसे लागू भी किया। इसलिए शिक्षकों के वेतनमान को लेकर कोई भी निर्णय सोच-समझकर ही लिया जाना चाहिए। झारखंड में पूर्व से लागू प्रावधानों को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। शिक्षकों को भी विश्वास में लेकर ही किसी प्रकार का बदलाव उचित होगा।

> शिक्षकों के वेतनमान को लेकर झारखंड में पूर्व से लागू प्रावधानों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता

अज्ञानता से उपजा विरोध

हृदयनारायण दीक्षित

शस्त्र राष्ट्र रक्षा-आत्मरक्षा के उपकरण हैं। शस्त्र पूजन प्राचीन परंपरा है। इसका उपहास उड़ाने वालों को इतिहास बोध व सांस्कृतिक राष्ट्र में विश्वास नहीं है

संस्कृति मनुष्य रचित उदात्त मधुमयता है। इसका जन्म वैदिक काल से पूर्व पूर्वजों की जिज्ञासा से हुआ। इसका विकास पूर्वजों के अनुभूत दर्शन व वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हुआ। संस्कृति के बीज दर्शन में हैं। इसकी अभिव्यक्ति ऋचा, मंत्र, काव्य, साहित्य, कला, संगीत और उदात्त जीवनशैली में प्रत्यक्ष है। यह अनेक प्रतीकों में प्रवाहमान है। भूमि पूजन की परंपरा वैदिक काल से है। ऋग्वेद में धरती माता है। 'वंदे मातरम्' राष्ट्रगीत है। इसका मूल भाव अथर्ववेद का भूमि सूक्त है। कुंभ कलश और स्वास्तिक सांस्कृतिक प्रतीक हैं। दीप प्रज्वलन, उत्सव, पर्व और संस्कार भी संस्कृति के भाग हैं। भारत का मन इनमें आश्वस्ति पाता है। शस्त्र राष्ट्र रक्षा आत्मरक्षा के उपकरण हैं। 'शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे' प्राचीन सूक्ति है। शस्त्र पूजन प्राचीन परंपरा है। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने पेरिस में भारत को मिले पहले राफेल विमान की पूजा की। कांग्रेस नेता मल्लिकार्जुन खड़गे सहित तमाम कांग्रेसजनों ने पूजन को तमाशा बताया है। इस पर खासी बहस चल निकली है।

इतिहास बोध व सांस्कृतिक राष्ट्र में खड़गे का विश्वास नहीं है। शस्त्र पूजन अंधविश्वास नहीं है। यहां वैदिक काल में कृषि कर्म से जुड़ा हल पूजन भी था। भारतीय सेना में हर साल शस्त्र पूजन होते हैं। सुजनों की रक्षा व दुष्टजनों को दंडित करने में शस्त्रों की भूमिका है। 'परित्राणाय साधूनाम, विनाशाय च दुष्कृताम' गीता का ही संदेश है। ऐसे पूजन सांस्कृतिक प्रतीक हैं। पं. नेहरू ने भी विशाखापत्तनम में 1948 में जल ऊषा जलयान के जलावतरण पर ऐसी ही पूजा की थी। कांग्रेस नेता और पूर्व रक्षा मंत्री एके एंटनी की पत्नी एलिजाबेथ ने वैदिक रीति से ही संपन्न आइएनएस विक्रांत के लोकार्पण में हिस्सा लिया था। एलिजाबेथ ने सिंदूरी कुमकुम से क्रॉस बनाकर पूजन संपन्न किया था। खड़गे जैसे मित्र ऐसे प्रसंग याद नहीं रखते। ऐसी परंपराएं भारतीय संस्कृति का भाग हैं। भारत अपनी सांस्कृतिक निरंतरता के कारण ही जीवमान राष्ट्र है। संस्कृति राष्ट्र का प्राण है। संस्कृतिविहीन राष्ट्र की मृत्यु निश्चित है।

दुनिया की तमाम प्राचीन संस्कृतियां व सभ्यताएं नष्ट हो गईं। मिस्री सभ्यता का लोप हो गया। सुमेरी, असीरियाई और बेबीलोनियाई संस्कृतियां अब इतिहास शेष हैं। प्राचीन ग्रीस और रोम की संस्कृतियां भी अब कहां हैं, लेकिन भारतीय संस्कृति हजारों वर्ष से निरंतर प्रवाहमान है। मार्क्सवादी विद्वान डीडी कोशंबी ने 'प्राचीन भारत की संस्कृति व सभ्यता' में लिखा है, 'मिस्र की महान अफ्रीकी संस्कृति में वैसी निरंतरता नहीं है जैसी हम भारत में हजारों वर्षों से देखते आए हैं। मिस्री, मेसोपोटामियाई संस्कृतियों का अतीत अरबी संस्कृति के पीछे नहीं जाता।' तमाम संस्कृतियों का ऐसा विवेचन कर कोशंबी लिखते हैं- 'इसके विपरीत भारत की ओर से किसी प्रकार के बल प्रयोग के बिना ही भारतीय धर्म-दर्शन का चीन और जापान में स्वागत हुआ। इंडोनेशिया, वियतनाम, थाई, बर्मा और श्रीलंका के सांस्कृतिक इतिहास पर भारत का प्रभाव पड़ा। भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है इसकी निरंतरता।' मूल प्रश्न है कि क्या छद्म सेक्युलरों का एजेंडा भारत की सांस्कृतिक निरंतरता को तोड़ना है? आखिरकार भारतीय सांस्कृतिक प्रतीकों एवं प्रतिमानों के विरोध का उनका उद्देश्य क्या है?

संविधान निर्माता भारतीय संस्कृति की राष्ट्र संवर्धन क्षमता से परिचित थे। डॉ. आंबेडकर ने स्वयं लिखा था कि भारतीय लड़ते-झगड़ते हैं, लेकिन संस्कृति उन्हें एक बनाए रखती है। संविधान की मूल प्रति में इसीलिए सांस्कृतिक राष्ट्रभाव वाले 23 चित्र जोड़े गए थे। इनमें श्रीराम और श्रीकृष्ण के चित्र हैं। वैदिक कालीन गुरुकुल आश्रम व श्रीकृष्ण-अर्जुन के प्रश्नोत्तर वाला चित्र व गंगावतरण सहित अन्य सांस्कृतिक प्रतीक चित्र हैं। संविधान सभा की 26 नवंबर, 1949 की कार्यवाही में अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने कहा, 'अब सदस्यों को संविधान प्रति पर हस्ताक्षर करने हैं। हस्तलिखित अंग्रेजी की प्रति पर कलाकारों ने चित्र अंकित किए हैं।' दुनिया की किसी भी संस्कृति में ईश्वर पर तर्क की परंपरा नहीं है। भारत में ईश्वर पर भी प्रश्न परंपरा है। संविधान सभा में राष्ट्रपति के शपथ प्रारूप में 'ईश्वर' जोड़ने पर दिलचस्प बहस हुई। एसवी कामथ ने कहा कि 'ईश्वर को संविधान में स्थान मिलना चाहिए।' महावीर त्यागी ने कहा, 'ईश्वर कहीं नहीं भुलाया गया।' केएम मुंशी ने कहा कि 'संस्कृति में ईश्वर है।' लंबी बहस का समापन करते हुए डॉ. आंबेडकर ने कहा कि ईश्वर या सत्यनिष्ठा दोनों ही शपथ में विकल्प होंगे। भारतीय संस्कृति में आत्म स्वतंत्रता एक खूबसूरत तत्व है। यह सर्व समावेशी है।

संस्कृति दार्शनिक विवेक की उपलब्धि है। यहां सतत शोध और बोध का वातावरण रहा है। पं. नेहरू ने 'संस्कृति के चार अध्याय' की भूमिका में लिखा, 'संस्कृति की अनेक परिभाषाएं मिलती हैं। संस्कृति शारीरिक मानसिक शक्तियों का प्रशिक्षण व विकास है। यह सभ्यता का भीतर से प्रकाशित होना है।' दीप प्रज्वलन दिव्य प्रकाश को ही नेह निमंत्रण है। ऋग्वेद के अंतिम सूक्त में पूर्वकाल की सांस्कृतिक परंपरा का उल्लेख है, 'मन समान, हृदय एक। समिति समान, मंत्रणा समान। ऐसी उपासना पूर्वकाल में पूर्वज करते रहे हैं-यथा पूर्वे संजानाना उपासते।' यहां सरस्वती उपासना की भी परंपरा है। सरस्वती ऋग्वैदिक अभिजनों की 'नदीतमा' नदी थीं। तट पर यज्ञ थे, गीत थे, मंत्र थे, शोध थे। वह स्वाभाविक ही वाग्देवी हुईं। कलाधर्मी उनकी स्तुति करते हैं, लेकिन ऐसे कार्यक्रमों में सरस्वती उपासना को भी हिंदू कर्मकांड बताया जाता है। आखिरकार हिंदू संस्कृति के प्रतीक सेक्युलर मित्रों को इतने बुरे क्यों लगते हैं?

दुनिया का सबसे बड़ा संगमन कुंभ है। क्या कुंभ को हिंदू पर्व कहकर खारिज कर देना चाहिए। योग का विकास वैदिक पूर्वजों ने किया था। पतंजलि ने सूत्रबद्ध किया। क्या इस विज्ञान को हिंदुओं द्वारा खोजा गया जानकर खारिज कर सकते हैं? भारतीय संस्कृति अंधविश्वास नहीं। इसका एक दर्शन है। दर्शन अंधविश्वास काटता है। इस संस्कृति का एक विचार शास्त्र है। विचार शास्त्र से व्यवहार शास्त्र का विकास हुआ है। व्यवहार शास्त्र से रीतिरिवाज बने हैं। यहां विचार और व्यवहार की एकता के प्रयास चला करते हैं। इसके लिए यहां अनेक प्रतीक हैं। काव्य, साहित्य संगीत सांस्कृतिक प्रवाह को गति देते हैं। संस्कृति में समाज के श्रेय आदर्श हैं। प्रेय व श्रेय साथ-साथ भी हैं। स्वास्तिक, तिलक जैसे सांस्कृतिक प्रतीकों के अपने उपयोग हैं। वे लोक व्यवहार को आच्छादित करते हैं। दर्शन और विज्ञान रूढ़ि और अंधविश्वास काटते हैं। हिंदू संस्कृति में प्रत्येक विचार के प्रति आदर है। ऋग्वेद के ऋषि ने स्तुति की है, 'मेरे पास सभी दिशाओं से शुभ विचार आएं-आ नो भद्रा क्रतवो यंतु विश्वतः।' भारत की संस्कृति में विद्वानों ने अंकों का आविष्कार किया। अंकगणित भारत से अरब गया और अरबों से अन्य देश। क्या सेक्युलर मित्र अंकगणित सहित हिंदुओं द्वारा खोजे गए समस्त ज्ञान-उपासना को हिंदू होने के आरोप में निरस्त करने को ही तत्पर हैं?

(लेखक उत्तर प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष हैं)

response@jagran.com

पराली बदल सकती है खेती की तस्वीर

पंकज चतुर्वेदी

किसान समझदारी दिखाएं तो वे फसल अवशेषों से खाद बनाकर अपने खेत की उर्वरता को बढ़ा सकते हैं

इन दिनों दिल्ली और उसके आसपास ताकीद कर दी गई है कि जल्द ही पंजाब-हरियाणा के किसान खेतों में धान की फसल के अवशेष या पराली जलाएंगे जिससे राजधानी के दो सौ किलोमीटर में फैली आबादी के लिए सांस लेना दूभर हो जाएगा। दिल्ली सरकार ने तो हवा को शुद्ध रखने के लिए अगले महीने सड़क पर वाहनों को कम लाने के इरादे से 'ऑड-इवेन' की भी घोषणा कर दी है। हालांकि खेतों में पराली जलाना गैरकानूनी है, फिर भी धान उगाने वाला किसान इस कुरीति से खुद को मुक्त नहीं कर रहा है। यह सभी जानते हैं कि हरियाणा और पंजाब में ज्यादातर किसान पिछली फसल काटने के बाद खेतों के अवशेषों को उखाड़ने के बजाय खेत में ही जला देते हैं। इससे जमीन की उर्वरा शक्ति प्रभावित होती है, लेकिन किसान यदि थोड़ी समझदारी दिखाएं तो वे फसल अवशेषों से खाद बनाकर अपने खेत की उर्वरता को बढ़ा सकते हैं।

एक अनुमान है कि हर साल अकेले पंजाब और हरियाणा के खेतों में कुल तीन करोड़ 50 लाख टन पराली जलाई जाती है। एक टन पराली जलाने पर दो किलो सल्फर डाईऑक्साइड, तीन किलो ठोस कण, 60 किलो कार्बन मोनोऑक्साइड, 1460 किलो कार्बन डाईऑक्साइड और 199 किलो राख निकलती है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि जब कई करोड़ टन अवशेष जलते हैं तो वायुमंडल की कितनी दुर्गति होती होगी। इन दिनों सीमांत एवं बड़े किसान मजदूरों की उपलब्धता की चिक-चिक से बचने के लिए खरीफ फसल खासतौर पर धान काटने के लिए हार्वेस्टर जैसी मशीनों का सहारा लेते हैं। इस तरह की कटाई से फसल के तने का अधिकांश हिस्सा खेत में ही रह जाता है। फसल से बचे अंश का इस्तेमाल मिट्टी में जीवांश पदार्थों की मात्रा बढ़ाने के लिए नहीं किया जाना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। खासतौर पर जब पूरी खेती ऐसे रसायनों द्वारा हो रही है जो कृषि-मित्र सूक्ष्म जीवाणुओं को ही चट कर जाते हैं। खेत की जैव-विविधता का संरक्षण बेहद जरूरी है।

सरकार ने पराली जलाने को आपराधिक कृत्य घोषित किया है और किसानों को इसके लिए प्रोत्साहन राशि आदि भी दी जा रही है, लेकिन इसके निपटान में बड़े व्यय के चलते किसान मान नहीं रहे हैं। किसान चाहें तो गन्ने की पत्तियों, गेहूं के डंठलों जैसे अवशेषों से कंपोस्ट तैयार कर अपने खाद के खर्चे एवं दुष्प्रभाव से बच सकते हैं। इसी तरह जहां मवेशियों के लिए चारे की कमी नहीं है वहां धान की पुआल को खेत में ढेर बनाकर खुला छोड़ने के बजाय कंपोस्ट बनाकर उपयोग कर सकते हैं। आलू, मूंगफली, मूंग एवं उड़द जैसी फसलों के अवशेषों को भूमि में जोतकर मिला सकते हैं। केले की फसल के बचे अवशेषों से यदि कंपोस्ट तैयार कर लें तो उससे 1.87 प्रतिशत नाइट्रोजन, 3.43 फीसद फॉस्फोरस तथा 0.45 फीसद पोटाश प्राप्त किए जा सकते हैं। यह बात किसानों तक पहुंचानी जरूरी है कि जिन इलाकों में जमीन की नमी कम हो रही है और भूजल घटता जा रहा है वहां रासायनिक खाद के मुकाबले कंपोस्ट ज्यादा कारगर है और पराली जैसे अवशेष बिना किसी व्यय के आसानी से कंपोस्ट में बदले जा सकते हैं।

दरअसल यदि मिट्टी में नमी कम हो जाए तो जमीन के बंजर होने का खतरा बढ़ जाता है। यदि पराली को ऐसे ही खेत में कुछ दिनों तक पड़े रहने दिया जाए तो इससे मिट्टी की नमी बढ़ती है और कम सिंचाई से काम चल जाता है। फसल अवशेष को जलाने से खेत की छह इंच परत, जिसमें विभिन्न प्रकार के लाभदायक सूक्ष्मजीव और मित्र कीट के अंडे आदि होते हैं, आग में भस्म हो जाते हैं। साथ ही भूमि की उर्वरा शक्ति भी जर्जर हो जाती है। वहीं फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन कर कंपोस्ट बनाया जा सकता है या फिर अवशेषों को खेत में ही सड़ने के लिए छोड़ा जा सकता है। खेत में पराली छोड़ने से वह नमी संरक्षण, खरपतवार नियंत्रण एवं बीज के सही अंकुरण के लिए मल्चिंग (आधी सड़ी घास) का कार्य करती है।

उधर किसानों का पक्ष है कि पराली को मशीन से निपटाने पर प्रति एकड़ कम से कम पांच हजार रुपये का खर्च आता है। फिर अगली फसल के लिए इतना समय नहीं होता कि वे गीली पराली को खेत में पड़े रहने दें। फिर भारत के किसान मान भी जाएं तो सरहद पार से पराली का धुआं रोकने का कोई उपाय नहीं है। जाहिर है कि पाकिस्तान के पंजाब में भी धान की खूब खेती होती है और वहां की सरकार इस मसले में बेहद लापरवाह है। चूंकि अक्टूबर के दूसरे सप्ताह से जो हवाएं चलती हैं, अक्सर उनका रुख उस तरफ से हमारी ओर ही होता है। ऐसे में वह भयंकर धुआं दिल्ली तक की आबोहवा को दूषित करता है। किसान तो वैसे भी समाज को जीवन देने के लिए अन्न उगाता है, लेकिन अनजाने में ही पराली जलाने से भी सांस लेने से जुड़ी गंभीर तकलीफें और कैंसर तक का वाहक बना हुआ है। इससे उनका अपना परिवार भी नहीं बचता है। हालांकि केंद्र सरकार को भरोसा है कि इस साल पराली की मार कम ही होगी। इसे रोकने के लिए राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण ने खेतों में फसलों के कटने के बाद बचे अवशेषों को जलाने पर पाबंदी लगाई है। पराली जलाने पर सजा का भी प्रावधान किया गया है। यदि कोई किसान अपने खेतों में फसल अवशेष जलाते हुए पाया जाता है तो दो एकड़ रकबे वाले कृषक से 2500 रुपये, दो से पांच एकड़ वाले कृषक से पांच हजार रुपये एवं पांच एकड़ से अधिक रकबे वाले कृषक से 15 हजार रुपये हर्जाना वसूलने का प्रावधान किया गया है।

इसके अलावा इसकी रोकथाम के लिए केंद्र ने पिछले साल पंजाब एवं हरियाणा के किसानों को 1150 करोड़ रुपये दिए और निगरानी शुरू की। 20,000 से अधिक मशीनें भी किसानों को दी गईं। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2018 में पंजाब और हरियाणा के 4500 गांवों ने खुद को पराली जलाने से मुक्त घोषित कर दिया था। इन गांवों में अब तक पराली जलाने की एक भी घटना नहीं हुई है। केंद्रीय कृषि मंत्रालय की ओर से इस योजना से अलग भी किसानों को कई तरह की सुविधाएं मुहैया कराई गई हैं ताकि पराली जलाने पर रोक लगाई जा सके। इनका असर भी इस बार दिख रहा है। उम्मीद है कि देश पराली जलाने की समस्या से जल्द ही मुक्त हो जाएगा।

(लेखक पर्यावरण मामलों के जानकार हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

प्रसाद भवन

संसार के भवन जितने आकर्षक बने मन के भवन उतने ही जीर्ण-शीर्ण एवं खंडहरनुमा हो गए और उनमें निराशाओं, कुंठाओं की बड़ी-बड़ी बीहड़ झाड़ियां उग आई हैं। इसका दुष्प्रभाव यह हुआ कि बाहर का संसार आशामय एवं अंदर का संसार निराशामय होता चला गया। सांसारिक भवनों को जितना सजाया-धजाया, मानसिक एवं बौद्धिक भवन उतने ही कृशकाय, निष्प्रभावी एवं निस्तेज हो गए। पहले प्रकार के भवनों में सौंदर्य-प्रसाधनों से जितनी चमक-धमक आई, उतनी ही मन के भवनों की स्थिति जर्जर होती चली गई। यदि सांसारिकता में प्राण एवं ऊर्जा होती तो उसकी समृद्धि, महक, खाद-पानी से मन का भवन फलता-फूलता ही नहीं, बल्कि हर क्षण खिलखिलाता रहता।

ज्ञानवान प्रकृति का यही नियम है कि बाह्य जगत का जितना अधिक विस्तार होता रहता है, अंतर्जगत उतना ही अधिक संकुचित होता चला जाता है। दोनों में अजीब विरोधाभास है। आज मनुष्य बाहर के संसार एवं पदार्थों से जितनी अधिक तीव्रता से आनंद बटोरने का प्रयास करने लगा है, उतनी ही तीव्र गति से उस क्षणिक आनंद में ऊब, निराशा, पश्चाताप एवं असंतोष के भावों की सृष्टि होने लगती है। मानव सृजित कल्पित सुखों के तालाब में अतिशीघ्र ही दुखों की लंबी-लंबी जोकें लपलपाने लगती हैं।

सुख की प्रत्याशा से बोई गई सभी चाहत की बेलों पर तन-मन वेधी पुष्प एवं कंटक उग कर पग-पग पर जीव को गहन वेदना देकर चेताते रहते हैं, लेकिन अभिशप्त जीव तब भी अपनी अज्ञानता के अहम में फंसा इनमें लाभ पाने के दूसरे मार्ग ढूंढता रहता है। सांसारिक तृष्णाओं की हर डोर जीव को पीड़ा देकर उसे सावधान करती रहती है, लेकिन कामनाओं के फंसा जीव दुष्कर्मों के प्रभाव के कारण सत्य को झूठ एवं झूठ को सत्य समझ कर ही जीवन का दुर्लभ समय नष्ट करता रहता है। संसार के भवन होकर भी न होने का बोध कराते हैं, जबकि प्रभुनाम स्मरण का भवन भौतिक रूप में न होकर भी सदैव होने का बोध कराता रहता है।

डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश'

पर्यटन का गढ़ बनता भारत

सुधीर कुमार

2013 में देश के जीडीपी में पर्यटन उद्योग की हिस्सेदारी 6.7 फीसद थी, 2017 में यह बढ़कर 9.4 फीसद हो गई

केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय की तरफ से 2 से 13 अक्टूबर तक एक राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम पर्यटन पर्व-2019 का आयोजन किया गया है। पर्यटन पर्व का यह तीसरा संस्करण देश की सांस्कृतिक विविधता और पर्यटन के लाभों को प्रदर्शित करने तथा सभी के लिए पर्यटन सिद्धांत को मजबूत करने के उद्देश्य से देशभर में आयोजित हुआ है। पर्यटन सेवा क्षेत्र का तेजी से उभरता उद्योग है। आर्थिक समृद्धि तथा रोजगार सृजन इसके दो प्रमुख स्तंभ हैं। अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के अलावा पर्यटन का सामाजिक, सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व भी है।

पर्यटन केंद्रों के विकास से न सिर्फ उस क्षेत्र की प्रसिद्धि चारों ओर फैलती है, बल्कि इससे संबद्ध दर्जनों उद्योगों तथा तत्संबंधित हजारों लोगों की रोजी-रोटी का बंदोबस्त भी हो जाता है। पर्यटन उद्योग से संबद्ध टूर-ऑपरेटर, होटल इंडस्ट्री, हस्तशिल्प उद्योग, कला-संस्कृति से जुड़े कलाकार, परिवहन सेवा से जुड़े लोग, दुकान तथा कुटीर उद्योग से संबद्ध लोगों की लंबी श्रृंखला रोजगार से जुड़ती है। देश में कुल रोजगार सृजन में इसकी हिस्सेदारी लगभग 9 फीसद है। 2013 में देश के जीडीपी में पर्यटन उद्योग की हिस्सेदारी 6.7 फीसद थी, लेकिन 2017 में यह बढ़कर 9.4 फीसद हो गई। 2015 में भारत आने वाले विदेशी पर्यटकों की वृद्धि दर 0.45 फीसद थी, वह दो वर्षों में यानी 2017 में बढ़कर 8.7 फीसद हो गई। 2018 में भारत के कुल सकल घरेलू उत्पाद का 9.2 फीसद हिस्सा पर्यटन से प्राप्त हुआ, जबकि उसी वर्ष कुल रोजगार का 8.1 फीसद यानी 42 मिलियन नौकरी सृजन पर्यटन क्षेत्र से हुआ।

पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए मौजूदा सरकार ने स्वदेश दर्शन योजना एवं प्रसाद योजना को अमलीजामा पहनाना शुरू कर दिया है। इस योजना के तहत देश के पर्यटन इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास किया जा रहा है। प्रसाद योजना के तहत अमृतसर, अजमेर, द्वारका, मथुरा, वाराणसी, गया, पुरी, अमरावती एवं केदारनाथ सहित देश के कुल 41 शहरों को प्रमुख धार्मिक केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है, जबकि स्वदेश दर्शन योजना पर्यटकों के अनुभव को समृद्ध करने, रोजगार के अवसरों को बढ़ाने तथा सरोकारों पर ध्यान केंद्रित करने के प्रयासों को समन्वित करके उच्च पर्यटन मूल्य प्रतिस्पर्धा और स्थिरता के सिद्धांतों पर आधारित पर्यटन परिपथ विकसित करने का एक विजन है। इस योजना के तहत पर्यटन के विकास के लिए 15 विषयगत परिपथों की पहचान की गई है। पारंपरिक संस्कृति और कला संरक्षण पर जोर देने के लिए 2022 तक देश के 17 चर्चित स्थानों को विश्वस्तरीय पर्यटन स्थल में तब्दील करने के लिए सरकार ने कमर कस ली है।

पर्यटन स्थलों का विकास एवं जीर्णोद्धार सकारात्मक कदम है, तथापि इनकी खूबसूरती को लंबे समय तक बनाए रखना किसी चुनौती से कम नहीं है। नियमित देखरेख के अभाव में कई पर्यटन स्थल लोगों को आकर्षित करने में विफल हो जाते हैं। इसलिए प्राप्त आय को सौंदर्यीकरण पर इस प्रकार खर्च किया जाए कि पर्यटन स्थलों की मौलिकता बनी रहे।

(लेखक बीएचयू में अध्येता हैं)

मेलबाक्स

भारत की चिंताओं को समझे चीन

भारत चीन की दोस्ती का नया दौर शीर्षक से लिखे अपने लेख में संजय गुप्त ने यह ठीक ही कहा है कि अब चीन को भारत की चिंताओं को समझते हुए अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए। वस्तुतः निहित स्वार्थ में दो नावों पर पैर रखने वाला चीन भारत की चिंताओं को समझे बिना अपने दोनों पड़ोसी देशों को साधना चाहता है, लेकिन मोदी के नेतृत्व वाला भारत अब किसी गफलत में नहीं रहेगा, यह बात चीन को भी समझ लेनी चाहिए। कश्मीर जैसे भारत के आंतरिक मामले में पाकिस्तान की नाजायज दखलंदाजी को बढ़ावा देकर अपने हित के व्यापारिक मुद्दे पर भारत को बरगलाने की चीनी कोशिश अब कामयाब नहीं होगी। 21वीं सदी में एशियाई महाशक्ति के रूप में उभरने वाले भारत के साथ चीन को अब सभी मुद्दों पर साफ मन से बात करनी होगी। इसके साथ ही पाकिस्तान द्वारा कब्जाए गए भारतीय भू-भाग पर चीन द्वारा अनधिकृत रूप से आर्थिक गलियारा बनाना भी नाजायज है। मामल्लपुरम में भारत के साथ दोस्ती का हाथ बढ़ाने वाले चीन को अपनी इस खोटी नीयत पर गौर करना होगा। भारत की नीयत कभी भी साम्राज्यवादी नहीं रही, लेकिन अपनी सीमा के भू-भाग की रक्षा के लिए वह जान की बाजी लगा देगा, यह बात चीन की समझ में आ जानी चाहिए। डोकलाम मुद्दे पर भारत का रुख इसका ताजा उदाहरण है, जिसमें चीन को पीछे हटना पड़ा था। चीन को अब यह भी समझना होगा कि उसके हितों की रक्षा भारत के साथ ईमानदारी से जुड़ने में ही है, न कि पाकिस्तान को मोहरा बनाकर भारतीय हितों के साथ खिलवाड़ करने में। अब किसी भी दृष्टि से भारत को कमजोर समझने की भूल करना चीन को भारी पड़ेगा। कश्मीर मुद्दे पर पाकिस्तान के पक्ष में की जाने वाली उसकी सारी कवायद शायद इसीलिए नाकामयाब हो गई, क्योंकि विश्व बिरादरी में भारत की विश्वसनीयता चीन से कहीं ज्यादा बढ़ गई है। ऐसे में भारत के साथ साफ नीयत से जुड़कर अपनी साख को बनाए रखने में ही चीन की भलाई है।

डॉ. वीपी पाण्डेय, अलीगढ़

चाचा-भतीजे की जंग

लंबे समय तक हरियाणा व किसान राजनीति पर अपना दबदबा रखने वाले ताऊ चौधरी देवीलाल के परिवार की दो पार्टियां इस बार हरियाणा के चुनावी रण में हैं। ओमप्रकाश चौटाला की पार्टी इनेलो में चाचा-भतीजा अभय चौटाला और दुष्यंत चौटाला में वर्चस्व की राजनीति इस हद तक पहुंच गई कि चौटाला परिवार में फूट पड़ गई। दुष्यंत चौटाला ने भाई दिग्विजय और मां नैना चौटाला के साथ जननायक जनता पार्टी (जजपा) का गठन कर लिया। इस चुनाव में दुष्यंत चौटाला की सभाओं में लोग तो जुट रहे हैं पर अपना पहला विधानसभा चुनाव लड़ रही नई-नवेली पार्टी जजपा को कमजोर संगठन से जूझना पड़ रहा है। वैसे दुष्यंत चौटाला जजपा को एक नए विकल्प के तौर पर प्रस्तुत कर रहे हैं जो किसानों और युवाओं की बात तो कर ही रही है साथ ही उसके नेता बेरोजगारी के मुद्दे पर खट्टर सरकार को भी जमकर घेर रहे हैं। वहीं परिवार में फूट के बाद अभय चौटाला के नेतृत्व में चुनाव लड़ रही इनेलो कई सीटों पर अपने उम्मीदवार भी खड़े नहीं कर पाई। चुनाव से पहले पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल और खाप चौधरियों की तरफ से चौटाला परिवार को एकजुट करने की कोशिश की गई पर मतभेदों की वजह से यह कोशिश नाकामयाब हो गई। इनेलो में पड़ी इस फूट की वजह से इनका वोट बैंक बटता नजर आ रहा है। यह तो 24 अक्टूबर ही बताएगा कि वर्चस्व की जंग में चाचा भतीजे पर भारी पड़ता है या भतीजा चाचा पर, जो भी हो इस जंग का खामियाजा चौटाला परिवार को ही उठाना पड़ेगा।

यतेंद्र सिंह पूनिया, भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली

यह है जीवन

प्रेम शब्द ही आत्ममुग्ध कर देने वाला होता है। इसे सुनते ही मन स्वाभाविक रूप से प्रसन्न हो जाता है। प्रेम सही अर्थ में अत्यंत